E-ISSN: 2709-9385
P-ISSN: 2709-9377
JCRFS 2024; 5(2): 21-29
© 2024 JCRFS
www.foodresearchjournal.com
Received: 25-05-2024
Accepted: 30-06-2024

Raginee Singh
Research Scholar, University Department of Home Science. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

Dr. Asha Kumari Prasad
Associate Professor, University Department of Home Science. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

Correspondence
Raginee Singh
Research Scholar, University Department of Home Science. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन (रांची जिले के शहरी क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में)

Raginee Singh and Dr. Asha Kumari Prasad

सारांश
यह तुलनात्मक अध्ययन रांची जिले के शहरी क्षेत्रों में सरकारी और निजी प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विश्लेषण करता है। कार्य संतुष्टि एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्थिति है, जो किसी व्यक्ति की नौकरी के प्रति उसकी भावनात्मक संबंध को दर्शाती है। यह कार्य के प्रकार, वेतन, कार्य परिस्थितियां, सहकर्मियों के साथ संबंध, और पेशेवर विकास के अवसर जैसे विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करती है। संतुष्ट कर्मचारी अधिक उत्पादक, निष्ठावान और संगठन के प्रति समर्पित होते हैं, जबकि असंतोष से कार्य में रुचि और प्रदर्शन में कमी आ सकती है। भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से शिक्षा क्षेत्र में, कार्य संतुष्टि शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण होती है। शिक्षकों की कार्य संतुष्टि न केवल उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि यह उनके छात्रों को प्रेरित करने और शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग करता है और रांची जिले के शहरी क्षेत्रों में 260 शिक्षकों के नमूने पर केंद्रित है, जिनमें से 130 सरकारी और 130 निजी प्राथमिक विद्यालयों से हैं। अध्ययन विभिन्न पहलुओं की जांच करेगा, जैसे वेतन, कार्य वातावरण, प्रशासनिक समर्थन, पेशेवर विकास, छात्रों का प्रदर्शन, सहकर्मियों के साथ संबंध, और कार्य-जीवन संतुलन।

कुटशब्द: कार्य संतुष्टि, शिक्षक/शिक्षिकाएँ, सरकारी स्कूल, निजी स्कूल, प्राथमिक शिक्षा, शहरी क्षेत्र, रांची जिला, कार्य वातावरण, शिक्षक कल्याण, पेशेवर विकास, वेतन और लाभ, शिक्षा की गुणवत्ता

प्रस्तावना
शिक्षा वह माध्यम है जो मानव को पशु–तुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ–साथ अपने उठने–बैठने, चलने–फिरने और सामाजिक रीति रिवाजों को सीखता है। शिक्षा प्राप्ति के उपरांत ही मानव के सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा का महत्व प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। अपनी मृत्यु से पूर्व गौतम बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद से कहा था–'आत्दीपो भव' यानी अपने आप में प्रकाशवान बनी, जो शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा ही मानव जीवन को सार्थक बनाती है। शिक्षा जहां एक ओर बालकों का सर्वांगीण विकास करती है, उन्हें चरित्रवान, बुद्धिमान बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के विकास हेतु एक अनिवार्य एवं शक्तिशाली साधन है। बालक की व्यक्तिगत प्रगति, उसका मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।
भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है– 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का साधन माना गया है। शिक्षा मानव को उस सोपान पर ले जाती है जहां वह अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भारत में गुरू शिष्य की लम्बी परंपरा रही है–

गुरूर्ब्रह्म गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रहम, तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। बालक जो इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है वह भी स्वयं को शिक्षक के व्यक्तित्व के साथ अंगीकृत करना चाहता है। प्रत्येक शिक्षक का अपना एक निजी दर्शन होता है। शिक्षक द्वारा किया गया कार्य उसके आदर्शों, उद्देश्यों, मूल्यों एवं धारणाओं को परिलक्षित करता है और उसका प्रभाव छात्रों पर भी डालता है। इसी कारण प्रगतिशील एवं उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है।
अतः प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का स्वंय संतुष्ट होना, समायोजित होना एवं धनात्मक व्यक्तित्व का होना बच्चों के विकास पर भी अत्यन्त गहरा प्रभाव छोड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षकों की मनः स्थिति का अध्ययन करने में एक सार्थक एवं प्रभावी प्रयास हो सकता है।

कार्य संतुष्टिः एक सफल शिक्षक बेहतर होता है क्योंकि वह अपने कार्यो को अंतर्ज्ञान पर आधारित नहीं करता है बल्कि योजना बनाते हुए सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है, एक अच्छा दृष्टिकोण यह है कि सफल शिक्षक शिक्षण के लिए योग्यता एवं अनुकूल अभिवृत्ति होते हुए जो स्वयं में सुधार हेतु कार्य में व्यस्त रहता है। इस प्रकार त्रिवेदी सिंह (1988)[1] के अनुसार, ''शिक्षण निश्चित रूप से सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, आधुनिक औपचारिक स्थितियों विशेष रूप से युवा लोगों के साथ शिक्षक स्वस्थ विकास और स्थिर वयस्क जीवन के लिए शिक्षा, गाड़ी, गाइड आदि का निर्माण करता है। एक शिक्षक विद्यालय में मुख्य गतिशील बल है। विद्यालय परिस्थितियों में विद्यालय जब तक शिक्षकों का अस्तित्व नहीं है, सब कुछ अर्थविहीन है। सुन्दरान्जन व विलियप्पन (1994)[2] के अनुसार, कार्य संतुष्टि में समग्र जीवन की संतुष्टि का योगदान शामिल है। श्रीवास्तव (1997)[3] के अनुसार, कार्य संतुष्टि हमारे संगठन में जीवन की गुणवत्ता का उपाय है। प्रबंधकों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि जीवन की गुणवत्ता के घटक क्या है? एवं यह जानना कि सहकर्मियों के साथ उनका कैसा व्यवहार है। अनिल कुमार (2002)[4] के अनुसार, सरकारी एवं निजी प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के वास्तविक कार्यों के द्वारा जो परिणाम के आधार पर शिक्षकों की प्रभावी प्रतिक्रिया ही कार्य संतुष्टि है। सौरभ आर्या (2006)[5] के अनुसार, सरकारी एवं निजी प्राथमिक स्कूल केन्द्रों को अच्छी एवं सफल शैक्षिक प्रणाली एवं उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की आवश्यकता है, शिक्षक की भूमिका उनके रोजगार के रूप में सबसे प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम कौशल एवं विशेष रूप से व्यवहारिक जीवन में छात्रों को प्रगति करने के लिए योग्य रणनीतियां बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। दुनिया के किसी भी देश में उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि वह व्यवहारिक चर है जो लोगो को अपनी नौकरी पसंद करने की सीमा को इंगित करता है। सी. सीनिवास, (2007)[6] ने कार्य संतुष्टि के परिणामों का पता लगाया है। कार्य संतुष्टि, प्रबंधन, मनोविज्ञान और विशेष रूप से संगठनात्मक व्यवहार और मानव संसाधन प्रबंध के क्षेत्र में लंबी अवधि से चर्चा का उल्लेखनीय विषय बना रहा है कुछ अर्थशास्त्रियों ने हाल ही के वर्षो में इस विषय की ओर झुकाव एवं ध्यान दिया। संजय कुमार द्विवेदी (2008)[7] के अनुसार कार्य संतुष्टि बताते है कि कर्मचारी काम में आने के लिए कितने प्रसन्न रहते है एवं अपनी नौकरी को निभाने हेतु कितना निष्ठवान रहते है। एक अन्य शोधकर्ता के अनुसार कार्य संतुष्टि कार्यकर्ता जो कार्य वातावरण की पूर्ति में व्यक्तियों की विस्तार से आवश्यकता के मूल्यांकन का परिणाम है प्रिया शर्मा (1969)[8] के अनुसार कार्य संतुष्टि एक संगठन के अंदर अपने हिस्से के योगदान के प्रदर्शन के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति के परिणाम से भावनात्मक आनंद की प्राप्ति है। नंडयाला थिप्पैया (2008)[9] ने कार्य संतुष्टि को कार्य के अनुभव के रूप में परिभाषित किया है। ''उन सभी चीजो के मध्य अंतर द्वारा निर्धारित करता है जो एक व्यक्ति को अपने कार्य से प्राप्त करना चाहिए एवं वह सभी चीज जो वह वास्तव में प्राप्त करता है।'' विद्यालय को शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर अधिक ध्यान देना चाहिये क्योंकि यह शिक्षकों के संतुष्टि एवं दक्षता को बढ़ावा दे सकती है। विद्यालयों में शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक ऊर्जा के सुधार में महत्वपूर्ण कारकों में से एक शिक्षकों में कार्य संतुष्टि को बढ़ावा देना है।

कार्य संतुष्टि का परिचय

कार्य संतुष्टि एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्थिति हैए जो किसी व्यक्ति की नौकरी से जुड़ी उसकी भावनात्मक स्थिति को दर्शाती है। यह संतुष्टि विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करती हैए जैसे कार्य का प्रकारए वेतनए कार्य परिस्थितियांए सहकर्मियों के साथ संबंधए और पेशेवर विकास के अवसर।

शिक्षा क्षेत्र में कार्य संतुष्टि का महत्व।

शिक्षा क्षेत्र में कार्य संतुष्टि का विशेष महत्व हैए क्योंकि शिक्षिकाएं ही छात्रों के विकास और उनके शिक्षा के अनुभव का आधार होती हैं। उनकी कार्य संतुष्टि से न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता हैए बल्कि उनकी शिक्षण गुणवत्ता और छात्रों की शैक्षणिक प्रगति पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मुख्य कारक।

- **वेतन और लाभ।** उचित वेतन और अतिरिक्त लाभ कार्य संतुष्टि के प्रमुख कारक हैं। यह शिक्षिकाओं को आर्थिक स्थिरता प्रदान करता है और उनके काम के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को बढ़ाता है।
- **कार्य वातावरण।** सकारात्मक और सहयोगी कार्य वातावरण शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक अच्छा वातावरण उन्हें अधिक प्रभावी तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।
- **प्रोफेशनल विकास के अवसर।** निरंतर प्रशिक्षण और विकास के अवसर शिक्षिकाओं को अपने कौशल को बढ़ाने और अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **प्रमोशन के अवसर।** करियर में वृद्धि और प्रमोशन की संभावनाएं कार्य संतुष्टि को बढ़ाती हैं।
- **प्रशंसा और मान्यता।** शिक्षिकाओं के कार्य की सराहना और मान्यता उनकी कार्य संतुष्टि को बढ़ावा देती है।
- **कार्य.जीवन संतुलनरू** कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना भी कार्य संतुष्टि का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

सरकारी और निजी स्कूलों में कार्य संतुष्टि के अंतर

- **सरकारी स्कूलों में।** सरकारी स्कूलों की शिक्षिकाएं सामान्यतः वेतनए स्थिरता और अन्य सरकारी लाभों से संतुष्ट होती हैं। लेकिनए कभी.कभी उन्हें कार्य वातावरणए प्रशासनिक समर्थनए और संसाधनों की कमी के कारण असंतोष हो सकता है।
- **निजी स्कूलों में।** निजी स्कूलों की शिक्षिकाएं कार्य वातावरण और प्रमोशन के अवसरों से अधिक संतुष्ट हो सकती हैंए लेकिन उन्हें वेतन और नौकरी की स्थिरता के मामले में कम संतोष हो सकता है।

शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का प्रभाव

- **शिक्षण गुणवत्ता।** संतुष्ट शिक्षिकाएं अपने कार्य में अधिक रुचि लेती हैं और उच्च गुणवत्ता का शिक्षण प्रदान करती हैं।
- **छात्रों की शैक्षणिक प्रगति।** जब शिक्षिकाएं संतुष्ट होती हैंए तो वे अधिक प्रेरित होकर छात्रों की आवश्यकताओं को समझने और उनकी शैक्षणिक प्रगति में सहायता करने में सक्षम होती हैं।
- **स्कूल का माहौल।** कार्य संतुष्टि से संपूर्ण स्कूल का माहौल सकारात्मक बनता हैए जिससे शिक्षिकाएंए छात्रए और अन्य स्टाफ सदस्य सभी लाभान्वित होते हैं।

शोध की आवश्यकता

सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के अंतर को समझना आवश्यक है ताकि नीति निर्माताए स्कूल प्रशासनए और अन्य संबंधित पक्ष उन कारकों को पहचान सकें और आवश्यक सुधारात्मक कदम उठा सकें। यह न केवल शिक्षिकाओं की भलाई के लिए महत्वपूर्ण हैए बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है।

साहित्य समीक्षा

सरकारी और निजी स्कूलों में पुरुष और महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि शमिना तासनिम (2006)[13] ने नौकरी की संतुष्टि और स्कूल प्रतिबद्धता पर जांच की। लिंग का प्रभाव नौकरी की संतुष्टि और स्कूल प्रतिबद्धता की शिक्षक अध्ययन से पता चला कि शिक्षकों के लिंग का उसकी संतुष्टि और पुरुषों और उसकी धारणा पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है महिलाओं में स्कूल प्रतिबद्धता का स्तर समान है।

एकलॉग फेनॉट बेरहन (2005)[14] ने उल्लेख किया कि शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि और दृष्टिकोण का स्तर शिक्षण की ओर लिंग, वैवाहिक स्थिति, न्यूनतम योग्यता और शारीरिक स्थिति के बीच नौकरी की संतुष्टि की तुलना करने के लिए शारीरिक शिक्षा शिक्षकों का आय समूह शिक्षा, शिक्षक और शिक्षण के प्रति उनका दृष्टिकोण है।

जयश्री जी. वास्ट्रड (2006)[15] ने यह जानने के लिए शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि पर जांच की, कि क्या शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि संगठन के प्रकार (निजी बनाम सरकार) से प्रभावित थी। नौकरी की धारणा का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया था पुरुष बनाम महिला की संतुष्टि और टी–टेस्ट का उपयोग किया गया था। परिणाम से पता चला कि सरकार की नौकरी की एवं निजी स्कूल के शिक्षक के संतुष्टि के स्तर में अंतर था।

एम. लुकयानी (2004)[16] ने उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि विषय पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि के व्यापक क्षेत्र पर विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा पहले से किए गए शोध की समीक्षा करना था। उन्होंने पाया कि सभी उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए संकाय सदस्यों की नौकरी की संतुष्टि बहुत महत्वपूर्ण पहलू है और यह पूरे उच्च शिक्षा संस्थान में कर्मचारियों के प्रदर्शन और शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

गवेषणा का उद्देश्य एवं अभिप्रेरण (Objective of the investigation and motivation)

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है

1. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की स्थितियों को जानना।
3. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में मिलने वाली सुविधाएँ (वेतन, कार्य–अवधि एवं अवकाश) को जानना।

पूर्वकल्पना (Hypothesis)

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकल्पना का निर्माण किया गया है–

1. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को मिलने वाली कार्य संतुष्टि में विभिन्नता होती है।
2. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की स्थितियों में अन्तर है।
3. सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में मिलने वाली सुविधाओं (वेतन, कार्य–अवधि एवं अवकाश) में अन्तर है।

शोध अभिकल्प और शोध पद्धति (Research Design and Methodolgy)

प्रतिदर्शों की चयन विधिः इस अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया जाएगा। सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि के प्रभावों को अपने अध्ययन के अन्तर्गत प्राथमिक तथ्यों एवं द्वितीयक स्रोतों से किया जायेगा।

प्रतिदर्शों की संख्याः शिक्षिकाओं की कुल संख्या 260 होंगे। जिसमें सरकारी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की संख्या–130 एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की संख्या–130 होंगे।

प्रतिदर्शों की आयु का निर्धारणः सरकारी एवं निजी प्राथमिक केंद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं की उम्र सीमा वर्ष 25–45 होगा।

अध्ययन क्षेत्रः राँची जिला में शहरी क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में कार्यरत शिक्षिकाओं को लिया जाएगा। जो निम्नलिखित है–

सरकारी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र

- नव प्राथमिक विद्यालय, आनन्दपूरी चौक, हरमू
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, करम टोली चौक, रांची
- राजकीय कृत मध्य विद्यालय, हातमा,
- बिरसा प्राथमिक विद्यालय, हथिया गोन्दा, रांची
- राजकीय प्राथमिक मध्य विद्यालय, तिरिल, कोकर
- उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय, टंगरा टोली, बाजार टांड, कांके,
- एस.पी.जी. मिशन मध्य विद्यालय, चुड़ी टोला, रांची
- राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बोड़ेया, राँची
- आवासीय विद्यालय, अरसण्डे, राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, टंगरा टोली, राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, रातू, राँची
- उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय, अरगोड़ा, राँची आदि
- राजकीय प्राथमिक स्कूल, आजाद उर्दू, कर्बला चौक, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, पण्डरा, राँची
- राजकीय प्राथमिक स्कूल, गाडी होटवार, राँची
- एन.सी.एल.पी राजकीय प्राथमिक स्कूल, हिन्दपीड़ी, राँची
- संत पॉल प्राथमिक विद्यालय, चर्च रोड, राँची
- प्राथमिक स्कूल, इस्लामिया उर्दू बालिका, डोरण्डा, राँची
- राजकीय प्राथमिक स्कूल, पत्थरकुदवा, राँची
- मिडिल स्कूल, मधुकम, राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कडरू, राँची
- प्राथमिक विद्यालय, ओड पुलिस लाईन, राँची
- राजकीय प्राथमिक स्कूल, रिफुजी कॉलोनी, काटाटोली, राँची
- राजकीय प्राथमिक स्कल, तिरिल, कोकर, राँची
- मध्य विद्यालय, करम टोली, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, 56–सेट, डोरण्डा, राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बनहोरा, पण्डरा, राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, पुरानी राँची
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय, हिनू बस्ती, राँची
- प्राथमिक विद्यालय, काटाटोली, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, चर्च रोड, राँची
- प्राथमिक विद्यालय, कोकर, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, थडपखना, राँची
- प्राथमिक विद्यालय, बूटी, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, हिन्दपीढ़ी, राँची
- राजकीय मध्य विद्यालय, चुटिया, राँची

निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र

- वेदान्स इंग्लिश स्कूल, कांके रोड, राँची
- मोनट फोर्ड स्कूल, हथिया गोन्दा, राँची
- देव आस्था बिहार आकाश पब्लिक स्कूल, लाजपत नगर, राँची
- बिरसा मध्य विद्यालय, बोड़ेया, राँची
- मोहन मेमोरिया पब्लिक स्कूल, अरसण्डे, राँची
- डी.ए.वी. स्वर्णरेखा पब्लिक स्कूल, विद्यानगर, राँची
- डीवाईन पब्लिक स्कूल, मोराहाबादी, राँची
- निर्मला कान्मेनट स्कूल, मोरहाबादी, राँची
- प्राईमरी स्कूल, ऐदलहातु, राँची
- डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, हरमू, राँची
- आर.एन.जी. पब्लिक स्कूल, कोकर, राँची
- आदर्श विद्या मंदिर स्कूल, तिरिल रोड, राँची
- डान बास्को स्कूल, खोरटा टोली, कोकर, राँची
- पैरामाउन्ट पब्लिक स्कूल, नेजाम नगर, हिन्दपीढ़ी, राँची
- सेवेन स्टर एकेडमी, मंडप टोली, हेहल, पिस्का मोड़, राँची
- आदर्श विद्या मन्दिर, कोकर, राँची
- अरानी पब्लिक स्कूल, डिपाटोली, बरियातु, राँची
- हैप्पी डेज प्लेग्रुप एण्ड प्राइमरी स्कूल, कदु रोड, राँची
- स्टैनफोड इंटरनेशनल स्कूल, नामकुम, राँची
- जी.एन. मॉडर्न पब्लिक स्कूल, पिठौरिया, कांके, राँची
- गोडवाना प्राथमिक विद्यालय, गांधी नगर, राँची
- जे.एम.जे. प्राथमिक विद्यालय, डोरण्डा, राँची
- गुरूकुलम स्कूल, हरमू हाउसिंग, राँची
- मनन विद्यालय, एच.बी. रोड., बूटी, राँची
- रामटहल चौधरी मध्य विद्यालय, बूटी, राँची
- सेंट एनीज स्कूल, डुमरदगा, राँची
- विजन फोर्ड पब्लिक स्कूल, हवाई नगर, राँची
- टयूलिप इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, पण्डरा, राँची
- उत्कृष्ट पब्लिक स्कूल, महादेव सोखरा रोड, रातु, राँची
- लेडी के.सी रॉय मेमोरिया स्कूल, कमड़े, राँची
- शिव शक्ति पब्लिक स्कूल, बूटी, राँची
- होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल, ईटकी रोड, हेहल, राँची
- भवन विकास विद्यालय, पिठौरिया, राँची
- सेक्रेड मिशन हार्ट स्कूल, पिस्का मोड, राँची
- नेयर हार्ट पब्लिक स्कूल, राँची
- ताज मॉडर्न पब्लिक स्कूल, कलवाडीह, राँची आदि

तथ्य संग्रहण में प्रयुक्त उपकरण एवं विधियाँ (Tools to be used in the collection of data)

उपकरण: मीरा दीक्षित (जेएसएसटी–डीएम, हिन्दी, 2019) द्वारा निर्मित प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मापने का स्केल जिसमें कि विभिन्न पहलुओं पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को मापने हेतु 51 आईटम है।

विधियाँ: साक्षात्कारं असहभागी अवलोकन

शोध अध्ययन से संबंधित स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर

स्वतंत्र चर: विद्यालय से मिलने वाली सुविधाएँ (वेतन, अवकाश, कार्य अवधि)
कार्य स्थल की स्थितियाँ (विद्यालय में उपलब्ध आधारभूत सुविधाएँ)

आश्रित चर: शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर

सीमा का निर्धारण: झारखण्ड राज्य के राँची जिला के शहरी क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में कार्यरत शिक्षिकाओं को लिया जाएगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन का महत्व (Significance of the study)

प्रस्तावित शोध का महत्व इस बात में है कि सरकारी एवं निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षिकाओं की नौकरी से संतुष्टि नहीं होने के कारणों को जाना तथा सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की सुविधाओं में होने वाले मतभेदों को दूर करना, जबकि निजी स्कूलों की तुलना में सरकारी स्कूलों को केन्द्र एवं सरकार के द्वारा आर्थिक सहायता, वेतन भत्ता, महंगाई भत्ता, मूलभूत सुविधायें दिये जाते है जिसके बावजूद भी आज सरकारी स्कूलों की दशा में सुधार उस स्तर तक नहीं हो रहा है जिसकी जरूरत है। आज भी सरकारी स्कूलों की तुलना में गैर सरकारी स्कूलों की शिक्षा का स्तर में बहुत अन्तर देखा जाता है। अतः वर्तमान समय में इस अध्ययन का महत्व इस बात में है कि इसके कारणों को जानने का प्रयास किया जाए। अतः यह अध्ययन वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर को बढ़ावा देना तथा उसमें होने वाले कठिनाईयों एवं समस्याओं को दूर करने में महत्व रखता है।

Data Analysis, Result, Conclusion and Suggestion

परिकल्पना–1: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को मिलने वाली कार्य संतुष्टि में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूल में कार्य की अवधि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1-\mu2=0$ or $\mu1=\mu2$

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूल में काम की अवधि के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

$\mu1\neq\mu2$

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.23	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	73	45
Known Variance	971.5	313.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	0.781099694	
P(Z<=z) one-tail	0.217371931	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.434743862	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.434743862 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–1: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को मिलने वाली वेतन से रहन–सहन एवं सुविधा में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूल की जीवन स्थिति के मुकाबले वेतन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूल की जीवन स्थिति के अनुसार वेतन में महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2
महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T.No. 4.26	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	58	52
Known Variance	662	593.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	0.169333503	
P(Z<=z)one-tail	0.432767163	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.865534325	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.865534325 से बड़ा है ¼>½ α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–1: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को कार्यस्थल में मिलने वाली व्यवस्था में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की कक्षा में प्रकाश और हवा की उचित व्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की कक्षा में प्रकाश और हवा की उचित व्यवस्था के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.27	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	66	78
Known Variance	884	1142
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.26660085	
P(Z<=z)one-tail	0.394888252	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.789776503	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.789776503 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–1: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में शिक्षिकाओं को कार्यस्थल पर मिलने वाले सुविधा में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.54	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	56	61
Known Variance	624	911.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.12759836	
P(Z<=z)one-tail	0.449233414	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.898466829	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.898466829 से बड़ा है (झ) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–2: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र के कार्यस्थल में अन्तर पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 **वैकल्पिक परिकल्पना:** सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.5	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	48	63
Known Variance	859.5	813.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.36672734	
P(Z<=z)one-tail	0.356911205	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.713822411	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.713822411 से बड़ा है (>) α = 0-05 इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार हुआ, कि सरकारी के अपेक्षा में निजी प्राथमिक केन्द्रों में कार्य के अनुरूप उचित स्थान में पदस्थापित है।

परिकल्पना–2: सरकारी एवं निजी प्राथमिक स्कूल साफ–सुथरा स्थान एवं कार्यस्थल पर कार्य करने के पंसद में अन्तर पाया गया।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल पर स्वच्छता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल पर स्वच्छता के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.13	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	75	68
Known Variance	1030.5	1012
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	0.154887727	
P(Z<=z)one-tail	0.438454915	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.876909829	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.876909829 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–2: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में आवश्यकतानुसार कक्षा की सुविधा में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के सहकर्मी के बीच समानता की भावना में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के सहकर्मी के बीच समानता की भावना के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T.No. 4.46	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	47	67
Known Variance	568.5	828.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.53509611	
P(Z<=z)one-tail	0.2962917	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.592583401	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.592583401 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–3: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र के शिक्षकों में कार्यरत के अनुरूप वेतन में अन्तर पाया गया।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्य के विरुद्ध वेतन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के काम के मुकाबले वेतन में महत्वपूर्ण अंतर है।

μ1≠μ2

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.6	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	48	52
Known Variance	348.5	394
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.14679517	
P(Z<=z)one-tail	0.441646849	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.883293698	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.883293698 से बड़ा है (>) **α** = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–3: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में मिलने वाली अतिरिक्त कार्य के अनुरूप वेतन में अन्तर पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल पर शिक्षण के अलावा अन्य कार्य के भुगतान में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

μ1-μ2=0 or μ1=μ2

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के कार्यस्थल पर शिक्षण के अलावा अन्य कार्य के लिए भुगतान के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

$\mu1 \neq \mu2$

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.22	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	62	48
Known Variance	792	349.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	0.414371691	
P(Z<=z)one-tail	0.339300959	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.678601918	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.678601918 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–3: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को कार्यस्थल में उपलब्ध सुविधाओं में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 **शून्य परिकल्पना:** सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की प्रयोगशाला की उचित व्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1-\mu2=0$ or $\mu1=\mu2$

H_1 **वैकल्पिक परिकल्पना:** सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की प्रयोगशाला की उचित व्यवस्था के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

$\mu1 \neq \mu2$

महत्व (α½ के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.32	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	45	52
Known Variance	308.5	524
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.24260845	
P(Z<=z)one-tail	0.404154368	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.808308736	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.808308736 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–3: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की शिक्षिकाओं को कार्यस्थल में उपलब्ध सुविधाओं में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूलों में पुस्तकों की उपलब्धता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1-\mu2=0$ or $\mu1=\mu2$

H_1 वैकल्पिक परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक के स्कूलों में पुस्तकों की उपलब्धता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1 \neq \mu2$

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.39	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	52	58
Known Variance	351.5	629.5
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	-0.19156526	
P(Z<=z)one-tail	0.42404138	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.848082759	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.848082759 से बड़ा है (>) **α** = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

परिकल्पना–3: सरकारी एवं निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में शिक्षिकाओं को अवकाश के प्राप्ति के पश्चात मिलने वाले सुविधा में विभिन्नता पाया गया है।

H_0 शून्य परिकल्पना: सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की छुट्टी के बाद सुविधाओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1-\mu2=0$ or $\mu1=\mu2$

H_1 **वैकल्पिक परिकल्पना:** सरकारी शिक्षक और निजी शिक्षक की छुट्टी के बाद सुविधाओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mu1 \neq \mu2$

महत्व (α) के स्तर पर महत्वपूर्ण मूल्य : 0.05

z-Test: Two Sample for Means

T. No. 4.53	No of Govt. Teachers	No of Private Repliers
Mean	56	52
Known Variance	684	600.8
Observations	130	130
Hypothesized Mean Difference	0	
z	0.111594355	
P(Z<=z)one-tail	0.455572524	
z Critical (one-tail)	1.644853627	
P(Z<=z) two-tail	0.911145048	
z Critical two-tail	1.959963985	

निष्कर्ष: पी.मूल्य 0.911145048 से बड़ा है (>) α = 0.05 इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुआ।

सुझावः सरकारी प्राथमिक शिक्षा केद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लिए

- सरकारी प्राथमिक शिक्षा केद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं को स्वास्थ्य सुविधा मिलती है, जिसमें वृद्धि किया जाये, साथ ही उनके आश्रितों को भी मिलनी चाहिए।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को पेंशन की सुविधा मिलनी चाहिए।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को स्वास्थ्य बीमा मिलनी चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को समाजिक सुरक्षा मिलनी चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को कार्य के अनुसार पदोन्नति मिलनी चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अच्छा कार्य करने पर प्रोत्साहन राशि मिलना चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में खेल–कुद तथा मनोरंजन का कार्यक्रम होते रहना चाहिए, जिससे कार्यस्थल पर मन लगा रहे।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो, जो बच्चों के लिए लाभदायक होगा।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए समय–समय पर शैक्षिक सेमीनार का आयोजन करवाना चाहिए और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

निजी प्राथमिक शिक्षा केद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लिए

- निजी प्राथमिक शिक्षा केद्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं को स्वास्थ्य सुविधा मिलनी चाहिए, साथ ही उनके आश्रितों को भी मिलनी चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को पेंशन की सुविधा मिलनी चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को स्वास्थ्य बीमा मिलनी चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अवकाश के समय कार्य लेने पर भुगतान मिलना चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को समाजिक सुरक्षा मिलनी चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को कार्य के अनुसार पदोन्नति मिलनी चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अच्छा कार्य करने पर प्रोत्साहन राशि मिलना चाहिए।
- प्राथमिक प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में खेल–कुद तथा मनोरंजन का कार्यक्रम होते रहना चाहिए, जिससे कार्यस्थल पर मन लगा रहे।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को गृह भत्ता की सुविधा होनी चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को मंहगाई के अनुसार वेतन में वृद्धि किया जाना चाहिए।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को यातायात भत्ता की सुविधा एवं भुगतान होनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. सिंह, त्रिवेणी (1988), माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन, पी–एच.डी. एज्यूकेशन अवध यूनिवर्सिटी।
2. सुन्दरान्जन व विलियप्पन (1994), उच्च माध्यमिक शिक्षकों द्वारा प्रभावी भूमिका के निष्पादन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन, पी–एच.डी. एज्यूकेशन, बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी, झॉसी।
3. श्रीवास्तव (1997), माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं संगठनात्मक वातावरण में सम्बन्ध का अध्ययन, पी–एच.डी. एज्यूकेषन, आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा।
4. अनिल कुमार, ए. के. (2002), परसीव्ड स्ट्रेस ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू जॉब सैटिस फैक्शन एण्ड सरटेन पर्सनल्टी चैरेक्टेरिसटिक्स, (http://hdl.handle.net/10603/41927) पी–एच.डी. एज्यूकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ कालीकट।
5. आर्या, सौरभ (2006), ए स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड जॉब सैटिसफेक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू द एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ देयर स्टूडेन्ट्स, (http://hdl.handle.net/10603/10911) पी–एच.डी. एज्यूकेशन, बुंदेलखण्ड यूनिवर्सिटी।
6. सीनिवासम, सी.(2007), उच्च माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन,पी–एच.डी. एज्यूकेशन, अफशान, अनीस (2006), निजी एवं सार्वजनिक वित्तपोशित संस्थाओं में काम करने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का काम प्रेरणा तथा व्यावसायिक आकांक्षाओं के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन, अलीगढ मुस्लिम, यूनिवर्सिटी।
7. द्विवेदी, संजय कुमार (2008), माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर शैक्षणिक उपलब्धि एवं शिक्षण अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन (http://hdl.handle.net/10603/14915) पी–एच. डी. एज्यूकेशन, बुंदेलखण्ड यूनिवर्सिटी।
8. शर्मा, प्रिया (2008), ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ जॉब सैटिसफेक्शन इन रिलेशन टू टीचर इफेक्टिवनेस ऑफ गवर्नमेंट एण्ड प्राइवेट स्कूल टीचर्स एट सैकेण्डरी लेवल" एज्यूक्वेस्ट जनरल ऑफ रिसर्च एण्ड एक्सप्लोरेशन इन टीचर एज्यूकेशन, वोल्यूम 1 पृ. सं.36–41।
9. थिप्पैया, नंडयाला (2008), जॉब सैटिसफेक्शन अमॉग सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ रुरल एरियाज ऑफ आन्ध्र प्रदेश, (http://hdl.handle.net/ 10603/64531) पी–एच. डी. एज्यूकेशन, श्रीकृष्णदेवाराया यूनिवर्सिटी।
10. गारटिया, राधाकान्ता (2009), माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उनकी कार्य संतुष्टि एवं जबावदेयता के मध्य संबंध का अध्ययन, एज्यूट्रेकस, नीलकमल पब्लिकेशान, अप्रेल 2009 ,वाल्यमू 08, न.8 पृ.सं. 29–34।
11. राज बलवारिया,ऋषि (2013), ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ टीचर एज्यूकेटर्स इन सैकेण्डरी टीचर एज्यूकेशन इन्सटीट्यूटस इन गुजरात,(http://hdl.handle.net/10603/64288)पी–एच.डी. एज्यूकेषन, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बडौदा।
12. राय, एन.वी. और कुमारी के.वी.रतना (2016), माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, एड्यूट्रेकस, नीलकमल पब्लिकेशन अगस्त 2016, वोल्यूम 15, नं. 12 पृ.सं. 46–47।
13. तासनिम.शमिना, (2006), बांग्लादेश में प्राथमिक विद्यालयों पर महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन, पी–एच.डी. थीसिस, अफशान, अनीस (2006), निजी एवं सार्वजनिक वित्त पोषित संस्थाओं में काम करने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का काम प्रेरणा तथा व्यावसायिक आकांक्षाओं के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन, अलीगढ मुस्लिम, यूनिवर्सिटी।
14. फेनॉट बेरहन एकलॉग (2005), शिक्षकों कार्य संतुष्टि एवं असंतुष्टि इथोपिया के शहरी शिक्षकों पर एक प्रायोगिक अध्ययन, अनीस (2006), निजी एवं सार्वजनिक वित्तपोषित

संस्थाओं में काम करने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का काम प्रेरणा तथा व्यावसायिक आकांक्षाओं के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन , अलीगढ मुस्लिम, यूनिवर्सिटी।

15. वास्ट्रड,जयश्री जी. (2006), ए स्टडी ऑफ जॉब सैटिस्फेक्शन ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू देयर पर्सनल प्रोफेशनल एण्ड ऑर्गेनाइजेशनल वैरिएवल्स, (http://hdl.handle.net/10603/95983) पी–एच.डी. एज्यूकेशन,कर्नाटक यूनिवर्सिटी।
16. लुकयानी, एम. (2004), तुर्काना जिले में माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि में योगदान करने वाले कारकों का अध्ययन। अप्रकाशित एम.ए., थीसिस, नैरोबी विश्वविद्यालय।
17. आनंद एस.पी. (1994) व्यक्तित्व कारक और नौकरी संतुष्टि, भारतीय शिक्षा की समीक्षा, वॉल्यूम–XXII] नंबर 1 (एनसीईआरटी)
18. अग्रवाल, मीनाक्षी (1991) शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि कुछ जनसांख्यिकीय चर और मूल्यों के संबंध में, पीएचडी एडेकेशन विश्वविद्यालय।
19. अब्राहम, अमित, (1994) नौकरी से संतुष्टि और शिक्षक प्रभावशीलता कॉलेज के शिक्षकों, भारतीय पर एक अध्ययन मनोविज्ञान और शिक्षा की पत्रिका, Vol-25 (1 और 2), 61–64, (आईईए, जुलाई)
20. दीक्षित, एम. (1986), प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच. डी. एज्यूकेशन, लखनऊ यूनिवर्सिटी।
21. अग्रवाल,एस.सी.व विशाल (2009), शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व कार्य के प्रति समर्पण के संदर्भ में अध्ययन, एज्यूट्रेकस, नीलकमल पब्लिकेशन, अप्रेल 2009,वाल्यमू 08,न.6 पृ.सं. 32–35।
22. मेहरा,वंदना, कौर हरप्रीत (2011), सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकें का विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों के संदर्भ में कार्य संतुष्टि का अध्ययन, सृजन शोध विशेषाकं 2011,पृ.सं. 157।
23. अग्रवाल, पदमा (2011), के रिसर्च पेपर जिसमें उन्होंने शिक्षा–कर्मियों की कार्य संतुष्टि व शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन, सृजन शोध विशेषाकं 2011, पृ.सं. 146।